3 अनेकमुखी गंगा

क्या आप जानते हैं...

गंगा भारतीय जन-मानस की आस्था का प्रतीक है। इसे हम माँ कहकर पुकारते हैं। वैसे भी मानव-सभ्यता का विकास नदियों के किनारे ही हुआ है, इसलिए ये सभी जीवनदायिनी हैं। हमारे देश में गंगा का विशेष स्थान है। मनुष्य गंगा में स्नान करके पापों से मुक्ति पाते हैं। इसीलिए इसे पतितपावनी कहा गया है।

प्रस्तुत 'निबन्ध' में काका कालेलकर ने गंगा के विविध रूपों से हमारा परिचय कराया है जो आदिकाल से हमारी आराध्या भी रही है और जरूरत भी। गंगा हमारे देश की अधिकांश भूमि सींचती है, हमारा भरण-पोषण करती है और हमें मातृवात्सल्य प्रदान करती है। गंगा अपने साथ-साथ हमें पौराणिक तथा ऐतिहासिक स्मरण भी कराती है। गंगा गोमुख से निकलकर जैसे-जैसे आगे बढ़ती जाती है वैसे-वैसे अलग-अलग प्रवाहों के साथ मिलकर नस-नस रूपों में अपना परिचय कराती है।

नदी को यदि कोई उपमा शोभा देती है, तो वह माता की ही। नदी के किनारे पर रहने से अकाल का डर तो रहता है नहीं। मेघ राजा जब धोखा देते हैं तब नदी माता ही हमारी फसल पकाती है। नदी का किनारा यानी शुद्ध और शीतल हवा नदी के किनारे-किनारे घूमने जाएँ तो प्रकृति के मातृवात्सल्य के अखण्ड प्रवाह का दर्शन होता है। नदी बड़ी हो और उसका प्रवाह धीर-गंभीर हो, तब तो उसके किनारे पर रहने वालों की सम्पन्नता उस नदी पर ही निर्भर करती है। सचमुच नदी जनसमाज की माता है।

नदी किनारे बसे हुए शहर की गली-गली में घूमते समय एकाध कोने से नदी का दर्शन हो जाए, तो हमें कितना आनन्द होता है। कहाँ शहर का वह गन्दा वायुमण्डल और कहाँ नदी का यह प्रसन्न दर्शन। दोनों के बीच का अन्तर अविलम्ब मालूम हो जाता है। नदी ईश्वर नहीं है, बल्कि ईश्वर का स्मरण कराने वाली देवी है। यदि गुरु को वन्दन करना आवश्यक है तो नदी को भी वन्दन करना उचित है।

नदी के दर्शन मात्र से हमें आनन्द क्यों होता है?

यह तो हुई सामान्य नदी की बात। किन्तु गंगा तो आर्य जाति की माता है। आर्यों के बड़े-बड़े साम्राज्य इसी नदी के तट पर स्थापित हुए हैं। कुरू-पांचाल देश का अंग-बंगादि देशों के साथ गंगा ने ही संयोग किया है। आज भी हिन्दुस्तान की आबादी गंगा के तट पर सबसे अधिक है।

जब हम गंगा का दर्शन करते हैं तब हमारे ध्यान में सिर्फ फसल से लहलहाते खेत ही नहीं आते, न सिर्फ माल से लदे जहाज ही आते हैं, अपितु वाल्मीकि का काव्य, बुद्ध-महावीर के विहार और चैत्य, अशोक, समुद्रगुप्त या हर्ष जैसे सम्राटों के पराक्रम और तुलसीदास या कबीर जैसे सन्तजनों के भजन—इन सबका एकसाथ स्मरण हो आता है।

गंगा किन सन्तों और महापुरुषों का स्मरण करा देती है?

किन्तु गंगा के दर्शन का एक ही प्रकार नहीं है। गंगोत्री के पास के हिमाच्छादित प्रदेशों में इसका खिलवाड़ी कन्यारूप, उत्तरकाशी की ओर चीड़-देवदार के काव्यमय प्रदेश में मुग्धारूप, देवप्रयाग के पहाड़ी और सँकरे प्रदेश में चमकीली अलकनन्दा के साथ उसकी अठखेलियाँ, लक्ष्मण-झूले के विकराल पाश में से छूटने के बाद हरिद्वार के पास उसका अनेक धाराओं में स्वच्छन्द विहार, कानपुर

ाता हुआ उसका इतिहास-प्रसिद्ध प्रवाह, प्रयाग के विशाल पट पर हुआ उसका कालिन्दी के साथ त्रिवेणी-
भी की शोभा कुछ निराली ही है। एक दृश्य देखने पर दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती। प्रत्येक का सौन्दर्य
अलग, वातावरण अलग, माहात्म्य अलग।

से गंगा अलग ही स्वरूप धारण कर लेती है। गंगोत्री से लेकर प्रयाग तक की गंगा वर्धमान होते हुए भी एकरूप
ती है। प्रयाग के पास उससे यमुना आकर मिलती है। यमुना का तो पहले से ही दोहरा पाट है। वह खेलती है,
न्तु क्रीड़ासक्त नहीं मालूम होती है। गंगा शकुन्तला जैसी तपस्वी कन्या दीखती है। काली यमुना द्रौपदी जैसी
न्या मालूम होती है। शर्मिष्ठा और देवयानी की कथा जब हम सुनते हैं, तब भी प्रयाग के पास गंगा और यमुना
ाई के साथ मिलते हुए शुक्ल-कृष्ण प्रवाहों का स्मरण हो आता है।

काली यमुना किसके समान मालूम होती है?

ा में अनगिनत नदियाँ हैं, इसलिए संगमों का भी कोई पार नहीं है। इन सभी संगमों
ने गंगा-यमुना का यह संगम सबसे अधिक पसन्द किया है, और इसीलिए उसका
ा गौरवपूर्ण नाम रखा है। पिछली पाँच शताब्दियों में जिस प्रकार हिन्दुस्तान के
बदला, उसी प्रकार दिल्ली-आगरा और मथुरा-वृन्दावन के समीप से आते हुए
कारण गंगा का स्वरूप भी प्रयाग के बाद बिलकुल बदल गया है।

द गंगा कुलवधू की तरह गम्भीर और सौभाग्यवती दिखती है। इसके बाद उसमें बड़ी-बड़ी नदियाँ
जल मथुरा-वृन्दावन से श्रीकृष्ण के संस्मरण अर्पण करता है, जबकि अयोध्या होकर आने वाल
न्द्र के प्रतापी किन्तु करुण जीवन की स्मृतियाँ लाती है। दक्षिण की ओर से आने वाली चम्

रन्तिदेव के यज्ञयाग की बातें करती है, जबकि महान कोलाहल करता हुआ शोणभद्र गजग्राह के दारुण द्वन्द्व-युद्ध की
कराता है।

इस प्रकार, हृष्ट-पुष्ट बनी हुई गंगा पाटलिपुत्र के पास मगध साम्राज्य जैसी विस्तीर्ण हो जाती है। फिर भी
अपना अमूल्य कारभार लाते हुए हिचकिचाई नहीं। जनक और अशोक की, बुद्ध और महावीर की प्राचीन भूमि
निकलकर आगे बढ़ते समय गंगा मानो सोच में पड़ जाती है कि अब कहाँ जाना चाहिए? जब इतनी प्रचण्ड वारिराशि
अमोघ वेग से पूर्व की ओर बह रही हो, तब उसे दक्षिण की ओर मोड़ना क्या कोई आसान बात है? फिर भी वह उस
मुड़ गई है। दो सम्राट या दो जगद्गुरू जैसे एकाएक एक-दूसरे से नहीं मिलते, वैसा ही गंगा और ब्रह्मपुत्र का हाल है।
ब्रह्मपुत्र हिमालय के उस पार का सारा पानी लेकर असम से होती हुई पश्चिम की ओर आती है और गंगा इस ओर
पूर्व की ओर बढ़ती है। उनकी आमने-सामने भेंट कैसे हो? कौन किसके सामने पहले झुके? कौन किसे पहले रास्ता
अन्त में दोनों ने तय किया कि दोनों को दाक्षिण्य धारण कर सरित्पति के दर्शन के लिए जाना चाहिए और भक्ति-
होकर, जाते-जाते जहाँ सम्भव हो, रास्ते में एक-दूसरे से मिल लेना चाहिए।

इस प्रकार गोआलन्दी के पास जब गंगा और ब्रह्मपुत्र का विशाल जल आकर मिलता है, तब मन में सन्देह पैदा होता
है कि सागर और क्या होता होगा? विजय प्राप्त करने के बाद कसी हुई खड़ी सेना भी जिस प्रकार अव्यवस्थित हो जाती
और विजयी वीर मन में आए वैसे जहाँ-तहाँ घूमते हैं, उसी प्रकार का हाल इसके बाद इन दो महान नदियों का होता है
अनेक मुखों द्वारा वे सागर में जाकर मिलती हैं। प्रत्येक प्रवाह का नाम अलग-अलग है और कुछ प्रवाहों के तो एक से
अधिक नाम हैं। गंगा और ब्रह्मपुत्र एक होकर पद्मा का नाम धारण करती हैं। यही आगे जाकर मेघना के नाम से पुकारी
जाती है।

• गंगा और ब्रह्मपुत्र एक हो जाने पर किस नाम से जानी जाती हैं?

यह अनेकमुखी गंगा पहले ही की तरह हमें अनेक प्रकार की समृद्धि प्रदान करती जाती है
किन्तु हमारे निर्बल हाथ उसको उठा नहीं सकते।

—काका कालेलकर

लेखक परिचय

काका कालेलकर का जन्म महाराष्ट्र के सतारा नगर में 1 दिसम्बर, 1885 को हुआ। इनका पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर है। गांधी जी के निकटतम सहयोगी होने के कारण वे काका के नाम से जाने गए। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—स्मरण-यात्रा, धर्मोदय, हिमालयनो प्रवास, लोकमाता, जीवनानो आनन्द। 21 अगस्त, 1981 को इनका निधन हो गया।

द्ध-अर्थ

उपमा = समता, तुलना, अलंकार का एक भेद (simile); मातृवात्सल्य = माँ का प्रेम, ममता; अविलम्ब = बिना जरा-सी देर किए, तुरन्त; हिमाच्छादित = बर्फ से पूरी तरह ढका हुआ; माहात्म्य = महिमा, गौरव; त्रिवेणी-संगम = तीनों धाराओं का परस्पर मिलना; क्रीड़ासक्त = पूरी तरह से खेल में डूबी हुई; शुक्ल-कृष्ण = शुभ्र-साँवला; कुलवधू = भले घर की स्त्री; यज्ञयाग = हवन-पूजा युक्त एक वैदिक कार्य; शोणभद्र = सोन नदी; गजग्राह = हाथी और मगर; दारुण = करुणाभरे (grievous); द्वन्द्व-युद्ध = दो प्राणियों का परस्पर युद्ध; विस्तीर्ण = फैला हुआ; वारिराशि = जलधन, पानी का भण्डार, पानी की अधिकता; दाक्षिण्य = उदारता, सरलता; सरित्पति = समुद्र।

आओ, अभ्यास करें
Let's Do Exercise

पठन एवं लेखन अभिव्यक्ति

आपकी कलम से — Questions relating Text

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण करते हुए पुनः लिखिए– (श्रुतलेखन/Dictation)

साम्राज्य	वाल्मीकि	काव्यमय	स्वच्छन्द	हृष्ट-पुष्ट	असंख्य
....	....	....	....	....	....
....	....	....	....	....	....

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) नदी के किनारे रहने के क्या-क्या लाभ हैं?

(ख) शहर और नदी में क्या अन्तर है?

(ग) गंगा को आर्यों की माता क्यों कहते हैं?

(घ) गंगा के दर्शन से हमें क्या-क्या स्मरण हो आता है?

(ङ) गंगा-यमुना के संगम को 'प्रयागराज' नाम क्यों दिया गया है?

(च) गंगा और ब्रह्मपुत्र के मेल से सागर का सन्देह क्यों उत्पन्न होता है?

(छ) गंगा तथा यमुना नदी के लिए सफाई अभियान क्यों चलाना पड़ा? गंगा और यमुना में गन्दगी बढ़ने के कारण सफाई अभियान चलाया गया।

(ज) नदियाँ जीवन कैसे रचती हैं?

(झ) नदियों के किनारे ही सभ्यताएँ क्यों विकसित हुईं? HOTS

पाठ्यांश से — Questions relating Paragraph

3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

किन्तु गंगा के दर्शन का एक ही प्रकार नहीं है। गंगोत्री के पास के हिमाच्छादित प्रदेशों में इसका खिलवाड़ी कन्यारूप, उत्तरकाशी की ओर चीड़-देवदार के काव्यमय प्रदेश में मुग्धारूप, देवप्रयाग के पहाड़ी और सँकरे प्रदेश में चमकीली अलकनन्दा के साथ उसकी अठखेलियाँ, लक्ष्मण-झूले के विकराल पाश में से छूटने के बाद हरिद्वार के पास उसका अनेक धाराओं में स्वच्छन्द विहार, कानपुर से सटकर जाता हुआ उसका इतिहास-प्रसिद्ध प्रवाह, प्रयाग के विशाल पट पर हुआ उसका कालिन्दी के साथ त्रिवेणी-संगम–सभी की शोभा कुछ निराली ही है। एक दृश्य देखने पर दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती। प्रत्येक का सौन्दर्य अलग, भाव अलग, वातावरण अलग, माहात्म्य अलग।

(क) गंगा का खिलवाड़ी कन्यारूप कहाँ देखने को मिलता है? उत्तरकाशी

(ख) देवप्रयाग में गंगा किस नदी से मिल जाती है?

(ग) प्रत्येक जगह क्या-क्या अलग दिखाई देता है?

(घ) 'हरिद्वार' शब्द में कौन-सा समास है?